रात्रि क्लास 6/12/68 ओम शान्ति शिवबाबा याद है?

बच्चे समझते हैं हम साहबज़ादे और साहबज़ादियाँ हैं। फिर शाहज़ादे बनते हैं। साहब के ज़ादे ब्रह्मा द्वारा ही बनते हैं। बापदादा दोनों हैं तब बन सकते हो। नहीं तो बन न सको। आत्मा कितनी छोटी चीज़ है। शरीर तो बहुत बड़ी चीज़ है। तो इतना बड़ा दुम्ब घड़ी-2 याद पड़ता है। आत्मा कितनी छोटी है। आत्माओं को बाप कहते हैं तुम सभी साहबज़ादे हो। सभी को वर्सा मिलता है; परन्तु यहाँ बैठे तो प्रवृत्तिमार्ग है तो साहबज़ादे और साहबज़ादियाँ हो। बाप को याद न करेंगे तो वर्सा कैसे मिलेगा? एक है जिस्मानी बाप। दूसरा है रूहानी बाप। हद के जिस्मानी बाप से हद का वर्सा मिलता है। यह है बेहद का रूहानी बाप। सारा पढ़ाई पर मदार है। तन-मन-धन से सेवा करते हो ना। भण्डारी सर्विस करती है तो कितनी आशीर्वाद मिलती है। बाप ने यह तन लिया है लोन पर। तो इसमें भी मदद मिलती है। अपन को आत्मा समझ सिर्फ बाप को याद करना है। इसमें ही माया भुलाती है। इनको कहा जाता है युद्ध। हम याद करते हैं, माया भुलाती है, और बाकी कोई बाबा फेरा नहीं पहनाते हैं। तुम समझते हो हम बेहद के बाप के पास आए हैं। वह हम आत्माओं का बाप है। बेहद का बाप। तुम बेहद के बाप को याद तो कहाँ भी कर सकते हो। जितना याद करेंगे पाप कटते जावेंगे। याद की है यात्रा। यह अक्षर बाप ही सुनाते हैं। वह है तीर्थ यात्रा। यह है याद की यात्रा। मुक्तिधाम-जीवनमुक्तिधाम दोनों ही तीर्थ हैं मुख्य। वह है जड़ चित्रों की यात्रा। यहाँ है बाप के पास जाना। बुद्धि कहती है आत्माओं के बाप पास ज़रूर जानी है। कितने ढेर आत्माएँ जावेंगी। मनुष्य याद भी घर को करते हैं ना। घर में जाकर नया कपड़ा बदलना होता है। इसमें कोई तकलीफ की बात नहीं। माया सिर्फ भुलाती है। अभी छोटे–बड़े सभी की वानप्रस्थ अवस्था है। वाणी से परे जाना है। याद करते-2 तुम्हारी आत्मा पवित्र बन जावेगी। जाना भी है घर। यह 84 का पार्ट बजाया है। आत्मा का यह शरीर रूपी चोला है। इस चोले पर भी तुम कपड़े पहनते हो। नवयुग में नया जीवन होता है। पुराने युग में पुराना जीवन। तुम्हारा इस पेपर में सारा मदार है याद की यात्रा पर। तुम ..... तो हो ना। तुम जानते हो ऊपर से हम आत्माएँ आती हैं पार्ट बजाने लिए। तुम बच्चे सभी आस्तिक हो। बाप आकर आस्तिक बनाते हैं। माया फिर नास्तिक बना देती है। 5 विकार बहुत कशिश करते हैं। लिखते भी हैं। समझना चाहिए इन आँखों से जो कुछ देखते हैं वह सभी भस्म हो जाना है। यहाँ किसको भी याद न करना है। आत्माओं को जाना है अपने घर। सबसे तीखी आत्मा है। बिल्कुल छोटी है, कहाँ भी जा सकती है। बच्चे समझते हैं जो अच्छा दान-पुण्य आदि करते हैं तो इतना वहाँ मिलता है जो महल आदि बना सके। यहाँ फिर है रूहानी बात। अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान दे मालामाल बना दो। होगा तो दान करेंगे। होगा ही नहीं तो..... यह है अविनाशी ज्ञान रत्न। औरों को भी दान देते हो। वह होते हैं दानी, तुम हो महादानी। बहुत दान करते हो, बाप भी महादानी है। बहुत दान करते हैं तो दूसरे जन्म में तुमको स्थूलधन भी बहुत मिल जाता है। बाप समझाते हैं कुपात्र को दान न करो। शिवबाबा का भक्त नम्बर वन, ल॰ना॰ का भक्त नम्बर सेकेण्ड, राम-सीता का भक्त नम्बर थर्ड। उन्हों को ही टच होता है। तुम बच्चे देखते रहते हो। 18 रोज़ में कोई होशियार हो पड़ते। कोई 18 वर्ष में भी नहीं। सारा बुद्धि पर मदार है। एक दिन के भी आवेंगे। बाप राजयोग सिखला रहे हैं। इतने सभी सीख रहे हैं। झट टच हो जाता है। समझते हैं और-2 स्थानों पर प्रबन्ध करें। धन है तो बड़े-2 म्युज़ियम खोलते हैं। धन कम है तो कहेंगे गीता-पाठशाला घर में करते हैं। कब कोई पूछे, बोलो– यह है रूहानी ज्ञान, जो एक रूहानी बाप के पास ही होता है। कोई भी आवे तो दो बाप की राज़ बताना है। हम सभी भाई-2 हैं। तो बाप ज़रूर एक होना चाहिए। वर्सा मिलता है एक बाप से। बहुत खुशी में रहना चाहिए। बाबा आपकी तो कमाल है सारी सृष्टि को वरदान देते हो। शान्तिभव, सुखी भव। बाप कहते हैं सिर्फ मुझे याद करो, 84 की कहानी को याद करो। बस। उठते–बैठते याद में रहना है, तब भोजन में भी बल आये। जो अच्छी रीत याद करते हैं, वह बहुत प्रेम से भोजन बनाते हैं; क्योंकि इनसे तुम मनुष्य से देवता बनते हो। तो वह र(स)म चली आती है। बाप को याद करो, दादा (को) भूल जाओ। अच्छा, गुडनाइट।